P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मूल्यहीनता के सन्दर्भ में : 'राग दरबारी'

तेजेश्वर प्रसाद नोनियाँ
शोधछात्र,
हिन्दी विभाग,
काज़ी नज़रुल विश्वविद्यालय,
वर्द्धमान, पश्चिम बंगाल

सारांश

मनुष्य अपनी मनुष्यता, इंसानियत, ईमानदारी एवं मूल्यों की सहायता से समाज में अपनी पहचान और इज्जत बना पाता है। 'राग दरबारी' उपन्यास स्वतंत्र्योत्तर भारत का एक ऐसा आईना है जिसमें मानवीय जीवन के चारित्रिक ह्रास और बहुविकृत व्यवस्था के कई मलीन तत्व प्रतिबिंबित होते हैं। सन् 1968 में प्रकाशित 'राग दरबारी' उपन्यास जीवन को लिए हुए सामान्य मनुष्यों की समस्याओं से जूझ रहा है। यह उपन्यास अपराधियों, पुलिस, व्यापारियों और नेताओं के बीच एक मजबूत और भ्रष्ट गठजोड़ का सामना करने में बुद्धिजीवियों की लाचारी को उजागर करता है। इस उपन्यास की समस्याएँ सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक के साथ–साथ स्वतंत्र्योत्तर भारतीय समाज की मूल्यहीनता को भी प्रकाशित करते हैं। ये समस्याएँ आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द : सामाजिक मूल्यहीनता, मानवीय मूल्यहीनता, राजनैतिक मूल्यहीनता, शिक्षा व्यवस्था की मूल्यहीनता, युवा वर्ग और बुद्धिजीवी वर्ग की मूल्यहीनता।

प्रस्तावना

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास साहित्य में श्रीलाल शुक्ल एक लोकप्रिय, सम्मानीय, बहुचर्चित उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं। इनके उपन्यास 'राग दरबारी' में यह राग उस लोकतंत्रीय दरबार का है, जिसमें भारत की आजादी के बाद आज भी लोग आहत, कुंठित, निराश एवं अपंग की तरह काल दिए गए गये हैं। यह मोह का दौर था। इसमें उस विमर्श की खोज हुई है जिसमे भ्रष्टाचार, चोरी, लूट, डकैती, वर्गीय शोषण, यौन वर्जनाएँ, राजनैतिक दाँव–पेंच, दरकती अर्थ–व्यवस्था आदि द्वारा संचालित एवं संचारित है। इस उपन्यास के माध्यम से वे वर्तमान युग की अत्यंत जटिल और क्रूर व्यवस्था, शोषण की नीति, सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों का पर्दाफाश करते हैं। उपन्यास में विद्यमान शिवपालगंज, दरअसल भारत के वर्तमान स्वरूप का विस्तृत चित्रण है।

साहित्यावलोकन

श्री लाल शुक्ल आधुनिक काल के सुप्रसिद्ध उपन्यास एवं व्यंग्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक बंधन, कुरीतियाँ, भ्रष्टाचार और अन्याय के ढोंग आदि पर करारा प्रहार किया। उनके साहित्य में यथार्थ का चित्रण हुआ है। सीमा मिश्रा ''श्री लालशुक्ल के राग दरबारी का राजनैतिक संदर्भ'' में लिखी है। ''श्री लाल शुक्ल जहाँ एक ओर सरलता, सहजता, उदारता के धनी हैं, वहीं दूसरी ओर बड़प्पन, सादगी, नम्रता, निश्छलता तथा मधुर भाषिक हैं।''[1]

अध्ययन का उद्देश्य

'राग दरबारी' पढ़ने के बाद पाठक अपनी और समाज की विवशता पर दासता सा लगता है। पर यही निरीहता उसमें व्यवस्था बदलाव की एक बेचैनी भी पैदा करती है। भारतीय समाज के हर मूल्यों को जानने, समझने और परखने की इच्छा जागृत होती है। वह हर मूल्यों को अपने मूल्यों से तौलने पर बाध्य हो जाता है। और जीवन के सही मूल्यों को पाने का सही रास्ता ढूँढ़ने लगता है। जिन समस्याओं को श्रीलाल शुक्ल ने इतने वर्षों पहले उजागर किया वह समस्याएँ तो हमें आज भी वैसी ही दिखाई देती है।

सामाजिक मूल्यहीनता

लेखक का परिवेश आधुनिक युग का विकासशील भारत का परिवेश है। उन्होंने शहर से दूर एक गाँव शिवपालगंज की ग्रामीण समाज की समस्याओं को उजागर करते हुए समाज की मूल्यहीनता को दर्शाया है। समाज के मूल्यों में ह्रास की हो रही वृद्धि को प्रदर्शित करते हैं। बेला की शादी के पूर्व लड़के वाले उसके बाप गयादीन से कहते हैं – ''लड़का आपका है। जब चाहे ब्याह कर लें, पर आजकल बूरे दिन आ गए हैं। इसलिए लड़के को मैं सस्ते दामों पर बेचने के

लिए तैयार नहीं हूँ।''[2] अर्थात् बेला से शादी करने के लिए वह लोग (लड़के वाले) गयादीन से अधिक दहेज की अपेक्षा रखते हैं। इस प्रकार जाति प्रथा की समस्या भी इस उपन्यास में अपनी छाप छोड़े हुए हैं –''शास्त्रों में शूद्रों के लिए जिस आचरण का विधान है उसके अनुसार चौखट पर मुर्गी बनकर उसने वैद्यजी को प्रणाम किये। इससे प्रकट हुआ कि हमारे यहाँ आज भी शास्त्र सर्वोपरि है और जाति प्रथा मिटाने की सारी कोशिशें अगर फरेब नहीं है तो रोमांटिक कार्रवाइयाँ हैं।''[3]

मानवीय मूल्यहीनता

आधुनिक समाज में मानवीय मूल्यों की परिभाषा बदल गई है। सब के सब एक दूसरे की इज्जत करने में लगे हैं। सभी अपने स्वार्थों में जकड़े हुए है। ''तूमने मास्टर मोतीराम को देखा है कि नहीं? पुराने आदमी हैं। दारोगाजी उनकी बड़ी इज्जत करते हैं। वे दारोगाजी की इज्जत करते हैं। दोनों की इज्जत प्रिंसिपल साहब करते हैं। कोई साला काम तो करता नहीं सब एक दूसरे की इज्जत करते हैं।''[4] वैद्यजी इस उपन्यास के ऐसे पात्र हैं जो 62 साल का बूढ़ा है और अपने कूटनीतियों से सबका शोषण कर अपना घर और तिजोरी भरते हैं। ये मानवीय मूल्यहीनता प्रत्यक्ष उदाहरण है।

राजनैतिक मूल्यहीनता

राजनैतिक मूल्यहीनता इस उपन्यास की केन्द्रीय समस्या है। जिसमें मध्यमवर्गीय समाज पीसता जा रहा है। वर्तमान समाज की राजनीति में राष्ट्रहितकारी मूल्यों का यत्र–तत्र विघटन होता जा रहा है। इस उपन्यास के प्रायः सभी क्षेत्र समाज परिवार, कॉलेज, सरकारी संस्था, सामाजिक संस्था, कार्यपालिका एवं शिक्षा व्यवस्था में राजनीति का कु–प्रथा दिखाई देता है। कॉलेज में सालों से चुनाव नहीं होता ताकि वैद्यजी ही मैनेजर बने रहे। कॉपरेटिव यूनियन जैसे सरकारी संस्थाओं में गबन करवाते हैं और ग्राम पंचायत पर भी अपना अधिकार जमा लेते हैं। चुनाव के नजदीक आने पर चुनावी उम्मीदवार भाषण, लेक्चर और छुट–पुट काम में सुधार करके भोली ग्रामीण जनता से अपने लिए वोट माँगते है और चुनाव जीतने के बाद कार्यों को भूलकर आराम की जिंदगी जीते हैं। ''चुनाव के पहले रामाधीन के भैया ने उस स्थान का सुधार कराया था, क्योंकि शायद चुनाव कानून में लिखा है या पता नहीं क्यों सभी बड़े नेता चुनाव के कुछ महीने पहले अपने–अपने चुनाव क्षेत्र का सुधार कराते हैं। कोई न ये पुल बनवाता है, कोई सड़कें बिछवाता है, कोई गरीबों को अन्न और कम्बल दान करता है। उसी हिसाब से रामाधीन के भैया ने चबूतरे के आस–पास का नक्शा बदलने की कोशिश की थी।''[5]

शिक्षा व्यवस्था की मूल्यहीनता

शिक्षा मावन जीवन एक महत्वपूर्ण अंग है। वह मानव करती है। देश के विकास हेतु शिक्षा का प्रसार आवश्यक है। लेकिन आज की परिस्थिति दयनीय बनती जा रही है। शिक्षा व्यवस्था के विकृत एवं उसमें हो रही राजनीति को भली–भाँति प्रकट किया है। शिक्षा व्यवस्था से चिंतित शुक्ल, वैद्यजी के माध्यम से इस प्रकार प्रकाश डालते हैं – ''इस देश की शिक्षा पद्धति बिल्कुल बेकार है। ... फिर उस कॉलेज का हाल नहीं जानते। लुच्चों और शोहदों का अड्डा है। मास्टर पढ़ाना–लिखाना छोड़कर सिफ पॉलिटिक्स भिड़ाते हैं।''[6] श्रीलाल शुक्ल ने शिक्षा पद्धति के विषय में कहा है –''वर्तमान शिक्षा–पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।''[7] इसी तरह शिक्षण संस्थाओं की स्थिति भी बुरी है उसमें पढ़ाना–लिखाना कम और राजनीति, पॉलिटिक्स ज्यादा होता है। सबके सब अपने पदोन्नति के लिए पॉलिटिक्स करते रहते हैं और एक दूसरे के विरोधी बन जाते हैं।

युवावर्ग की मूल्यहीनता

युवा वर्ग की इस बिगड़ती स्थिति और मानसिकता को देखकर श्रीलाल शुक्ल अपने उपन्यास 'राग दरबारी' में कहते हैं – ''आप नवयुवकों की बात करते हैं। इस जमाने में वे हैं कहाँ? वे तो प्रेम अपने साथ पढ़ने वाली लड़की से करते हैं और ब्याह अपने बाप के द्वारा दहेज की सीढ़ी से उतारकर लायी गयी लड़की से। .... कक्षा में फिल्मी साहित्य पढ़ते हैं जिसमें विलायती औरत के उरोज तस्वीर फड़फड़ा रहे होते हैं।'[8]

इस उपन्यास के विषय में कहा गया है – ''अकेला राग दरबारी अपने आप में पूरे देश के तथा–कथ्य, सामंतशाही का भेद, सपना और बदलते ग्रामीण आचरण का निचोड़ रस है।''[9]

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह युवा वर्ग निरंतर दिशाहीन होती पुरानी पीढ़ी के समक्ष प्रश्न बनती खड़ी हो रही है। ''राग दरबारी गाँव की कथा के बहाने स्वातंत्र्योत्तर भारत के बुर्जुओं लोकतंत्र को नंगा किया गया है।''10 राग दरबारी एक मायने से क्रांतिकारी उपन्यास भी है क्योंकि वह पुरी व्यवस्था के प्रति गहरी घृणा पैदा करता है। पूरे उपन्यास में कहीं भी आशा की कोई किरण नजर नहीं आती। लेखक को गाँव व्यवस्था लोगों के चरित्रों आदि किसी पर भी भरोसा नहीं रहा है।

निष्कर्ष

अंततः उपन्यास के बारीक सर्वेक्षण के उपरांत यह कहा जा सकता है कि राग दरबारी अपने समय के यथार्थ के साथ न्याय करता है तथा वर्तमान ग्रामीण व शहरी मूल्यहीनता के प्रति तीखा आक्षेप व्यक्त करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मिश्रा सीमा – श्रीलालशुक्ल के राग दारबारी का राजनैतिक संदर्भ, पृ0–21*
2. *शुक्ल श्रीलाल – राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ0–250*
3. *शुक्ल श्रीलाल – राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ0–22*
4. *शुक्ल श्रीलाल – राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ0–71*
5. *शुक्ल श्रीलाल – राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ0–168*
6. *शुक्ल श्रीलाल – राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ0–25*
7. *शुक्ल श्रीलाल – राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ0–9*
8. *शुक्ल श्रीलाल – राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ0–20*

9. *मिश्र चन्द्र प्रकाश – राग दरबारी कृति से साक्षात्कार, पृष्ठ सं0–17*

10. *सिंह बच्चन – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, सातवीं आवृति : 2014, पृ0–485*